सुरमयी शाम

डीजी आलोक राज के सुरों से महकी चंद्रगुप्त प्रवंधन संस्थान की शाम, निर्गुन और भजन से लेकर गजल का चला दौर

जब प्यार नहीं है तो भूला क्यों नहीं देते, खत किसलिए...

जागरण संवाददाता, पटना : 'जन्म-जन्म मैंने भी ओढ़ी तेरी श्याम चदरिया रे...', 'दिन गए अब बीत शर्मिली हवाओं के...', 'चांदनी छत पर चल रही होगी, अब अकेली टहल रही होगी...' जैसे शानदार गीत और गजलों की खुशबू से मंगलवार की शाम चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान का सभागार महक उठा। मौका था डीजी (ट्रेनिंग) आलोक राज के म्यूजिकल इवनिंग कार्यक्रम का।

कार्यक्रम की शुरुआत आलोक राज के संगीत गुरु अशोक कुमार प्रसाद ने सरस्वती वंदना 'वर दे वीणा वादिनी वर दे...' से की। आलोक राज ने कहा संगीत उनका पैशन है। सुगम संगीत की कई विधाएं होती हैं। इसमें गीत, गजल और भजन होते हैं। उन्होंने डॉ. गोपाल सिंह नेपाली के गीत से निर्गुण शैली में भगवान श्याम की स्तुति कर अपने सुर की खुशबू बिखेरी। 'जन्म-जन्म ओढ़ी श्याम तेरी चदरिया रे...' गाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बताया कि अबतक उन्होंने तीन एलबम किये। इसके बाद उन्होंने दीप चंडी ताल में 'दिन गए अब बीत शर्मिली हवाओं के...' गाकर लोगों की तालियां बटोरीं। दुष्यंत की एलबम की गजल से 'चांदनी छत पर टहल रही होगी, अब फिर अकेली चल रही होगी...' गाकर सबके दिलों को जीत लिया। 'मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूं वो गजल आपको सुनाता हूं, तू किसी रेल सी गुजरती है मैं किसी पुल सा थरथराता हूं...' सुनाया तो पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। उन्होंने कहा कि वेलेंटाइन वीक आ रहा है। किसी का प्यार सफल होता है तो किसी का असफल। उसपर भी गीत और गजल बन जाते हैं। उन्होंने हसरत जयपुरी की राग भोपाली में गजल सुनायी 'जब प्यार नहीं है तो भूला क्यों नहीं देते, खत किसलिए रखे हैं जला क्यों नहीं देते...' सुनाकर शाम को और भी हसीन बना दिये। ये सिलसिला यहीं नहीं थमा। इसके बाद उन्होंने 'होठों पर मोहब्बत के फसाने नहीं आते, साहिल समंदर के खजाने नहीं आते...' सुनाकर सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। आलोक राज के साथ पैड पर विजय कुमार, तबले पर चरण जीत सिंह, हारमोनियम पर अशोक कुमार प्रसाद और कीबोर्ड पर सुभाष कुमार मिश्रा ने संगत किया।

चंद्रगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में आयोजित म्यूजिकल इवनिंग कार्यक्रम में गीत प्रस्तुत करते बिहार पुलिस के डीजी आलोक राज (बीच में)। ● जागरण

Dainik Jagran ! Page.No-19 ! Dated:05-02-2020

म्यूजिकिल इवनिंग | आईपीएस आलोक राज ने चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान में खोले कई राज, सुनाए बॉलीवुड गीत

पुलिस का धौंस दिखा हैदराबाद में हम सबने देखी थी सलमान खान और भाग्यश्री की फिल्म मैंने प्यार किया

सिटी रिपोर्टर. पटना

तब हम प्रोबेशनर थे। हैदराबाद के सिनेमा हॉल में मैंने प्यार किया फिल्म लगी थी और हाउसफुल थी। हम सभी ने पुलिस का धौंस दिया। इसके बाद मैनेजर ने कहा कि टिकट का इंतजाम करवा दिया है। 'मैंने प्यार किया' फिल्म से जुड़ा यह संस्मरण सुनाते हुए आईपीएस व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस-ट्रेनिंग आलोक राज ने इस फिल्म का गाना सुनाया- मेरे रंग में रंगने वाली परी हो या हो परियों की रानी.. मेरे सवालों का जवाब दो.... दो ना...। वे चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान के ऑडिटोरियम में आयोजित म्यूजिकिल इवनिंग में गा रहे थे।

कार्यक्रम की शुरुआत अशोक कुमार प्रसाद ने राग दरबारी में ... वर दे वीणा वादिनी वर दे... से की। आईपीएस आलोक राज ने इस हसीन शाम की शुरुआत गोपाल सिंह नेपाली के निर्गुण शैली के गीत से की- जनम-जनम मैंने जी ओढ़ी तेरी श्याम चदरिया रे... लेकिन उड़ी विदेश चदरिया रे...।

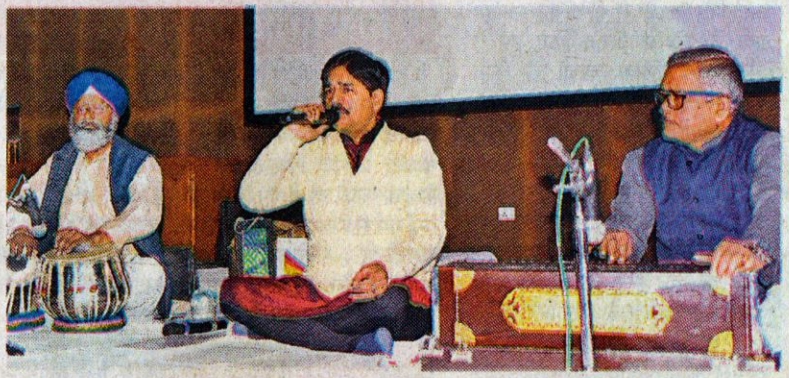

सीआईएमपी में म्यूजिकल इवनिंग में गीत सुनाते आईपीएस आलोक राज।

आलोक राज के तीन अलबम अब तक आ चुके हैं। साईं अर्चना, नीरज के गीत और दुष्यंत की गजलें। उन्होंने गोपाल दास नीरज का गीत यह कहते हुए सुनाया कि युवा इन गीतों को समझ लें तो उन्हें कई क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। उन्होंने गाया- दिन गए अब बीत...शर्मीली हवाओं को... दूर तक दिखते नहीं जूड़े घटाओं में।

दुष्यंत की गजल को राज ने वैलेंटाइन वीक के नाम समर्पित किया- चांदनी छत पे चल रही होगी, अब अकेले टहल रही होगी, फिर मेरा जिक्र आया होगा, वो बरफ-सी पिघल रही होगी।

दुष्यंत कुमार की यह प्रसिद्ध गजल जब उन्होंने सुनायी तो तालियां खूब बजीं-

मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं, वो गजल आपको सुनाता हूं
एक गजल है तेरी आंखों में, मैं जहां राह भूल जाता हूं
तू किसी रेल सी गुजरती है, मैं किसी पुल सा थरथराता हूं।

इसके अलावा हसरत जयपुरी की गजल ...जब प्यार नहीं है तो बता क्यों नहीं देते और बशीर बद्र की गजल 'होठों में मुहब्बत के फसाने नहीं आते, साहिल पर समंदर के खजाने नहीं आते' भी गाए। मैंने प्यार किया फिल्म के अलावा अन्य कई बॉलीवुड फिल्मों के फेमस गीत भी उन्होंने गाए। राज ने कहा- संगीत को जीवन में लाएंगे तो बुराइयों से दूर भी हो जाएंगे। अशोक कुमार प्रसाद, सुभाष, चरणजीत और विजय कुमार साह ने मंच पर सहयोग दिया।

Dainik Bhaskar ! Page.No-17 ! Date-05-02-2020

जब प्यार नहीं है तो भुला क्यों नहीं देते...

पटना | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

जब प्यार नहीं है तो भुला क्यों नहीं देते.../ अब अकेली टहल रही होगी या छत पे अकेली चल रही होगी ...। संगीत की धुन और गायिकी की तान ने युवाओं के चेहरों को खिला दिया। बात जब गीत और गजल की हो तो मुहब्बत के अफसाने भी जवां हो जाते हैं।

कुछ ऐसे ही नज्मों और गजलों को आवाज दी पुलिस विभाग के वरीय अधिकारी आलोक राज ने। चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान की ओर से सभागार में एक संगीतमय शाम का आयोजन किया गया। आलोक राज ने शायर दुष्यंत कुमार, हसरत जयपुरी व बशीर बद्र की कई गजलों पर तान छेड़ी। छात्रों के अनुरोध पर फिल्मी गीतों को भी परोसा। कार्यक्रम की शुरुआत सबसे पहले सरस्वती वंदना से हुई। उसके बाद गायक अलोक राज ने कई गजलों की प्रस्तुति दी। इस दौरान सुधी दर्शक उनकी गायिकी की तान में गोते लगाते रहे। आलोक राज ने दुष्यंत कुमार की कई गजलों को गाकर सुनाया। उसके बाद वहां मौजूद युवाओं से जब कहा कि वेलेंटाइन डे नजदीक है। तब युवा भी चहक उठे।

सीआईएमपी में मंगलवार को गीत की प्रस्तुति देते वरीय अधिकारी आलोक राज।

उन्होंने आगे कहा कि किसी का प्यार सफल हो या असफल गीतकारों ने दोनों के लिए गीत लिखे हैं। राग भोपाली में हसरत जयपुरी की गजल जब प्यार नहीं है तो भुला क्यों नहीं देते, खत किस लिये रखे हो जला क्यों नहीं देते ... को गाकर सुनाया। आगे बशीर बद्र का जिक्र किया और उनकी गजल होठों पे मुहब्बत के फसाने किस प्रकार आते हैं गाकर सुनाया। इस अवसर पर उन्होंने फिल्मी गीतों की झड़ी भी लगायी। यहां के छात्र-छात्राएं और शिक्षकों ने गीत-संगीत का भरपूर लुत्फ उठाया। सभी प्रस्तुति पर तालियां बजाते हरे। इस अवसर पर पुलिस विभाग के कई वरीय अधिकारी व संस्थान के भी पदाधिकारी मौजूद रहे।

Hindustan (Hindi) ! Page.No-24 ! Date- 05-02-2020